"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक-03 वर्ष-02, जून 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

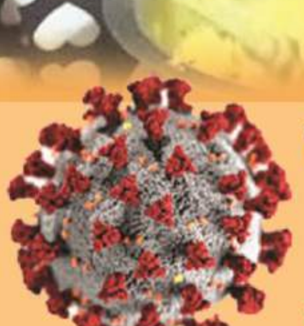

कोविड-19 (कोरोना) वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

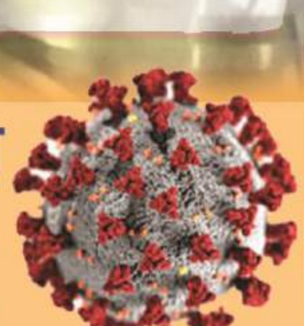

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-03 वर्ष-02, संवत्सर 2077 जून 2020 (मासिक)

अनुक्रमणिका

लेख-कविता — पृष्ठ संख्या

वेदवाणी....03
सम्पादकीय....04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया....05
कवि की कलम से....06
मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?....07-08
बुद्धि की परीक्षा....09
स्वास्थ्य चर्चा....10
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां....11-15
विज्ञापन....16

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप
नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

हे आदित्यो! मरने से पूर्व मुझे बचा लो

वेद मंत्र

ओ३म् जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात्। कद्ध स्थ हवनश्रुतः।।

-ऋ० ८।६७।५

ऋषिः-**मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरूणिर्बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः।।**
देवता-**आदित्यः।।** छन्दः-**निचृद्गायत्री।।**

विनय

हे आदित्य देवो! दौड़ो! हमें बचाओ! मौत हमारे सामने मुंह खोले खड़ी है। अगले ही क्षण में हम उसके ग्रास होने वाले हैं। भोगों को भोगते हुए तो हमें मालूम न था कि ये आसानी से भोगे जाते हुए भोग एक दिन भोक्ता बनकर हमें खाने के लिए आएंगे। उस समय हम खुशी से अपने को इन विषयों के बन्धन-जाल में बांधते गये, यह अनुभव न किया कि हम मृत्यु के जाल में बंध रहे हैं, परन्तु अब इस समय का-यह मृत्यु-मुख में जाने का एक क्षण, पश्चात्तापमय यह एक क्षण, शेष सारे बीते हुए जीवनकाल के मुकाबले में खड़ा है। बस, यही एक क्षण है इस बीच, हे आदित्यो! मैं तुम्हें पुकार रहा हूं। सुना है तुम जगदीश्वर की अखण्डनीय शक्तियां हो, तुम बन्धन-जाल से छुड़ानेवाली शक्तियां हो, तुम प्रकाश देने वाली शक्तियां हो। तुम कहां हो? मेरी पुकार क्यों नहीं सुनते? क्षणभर में दम निकलना चाहता है। तुम तो 'पुकार सुननेवाले' (हवनश्रुत) प्रसिद्ध हो। तुमने बड़े-बड़े पापियों के हार्दिक पश्चात्ताप के करूण-कुन्दनों को सुना है और उन्हें अन्तिम समय में भी उबारा है। क्या यह मेरा इस समय का पश्चात्तापमय रूदन भी हृदय से निकला रूदन नहीं है? तो फिर तुम क्यों नहीं सुनते? क्यों नहीं दौड़कर मुझे बचाते? क्या अगले क्षण जब मैं मर चुकूंगा, मेरा विनाश पूर्ण हो चुका होगा, मेरी समाप्ति हो चुकी होगी, तब आओगे? तब क्या बनेगा? ओह! यदि मेरा उबरना अभीष्ट है तो ये जो जीवन के दो-चार पल शेष हैं, इन्हीं में आ पहुंचो। दौड़ौ, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ!

शब्दार्थ

आदित्यासः- हे आदित्यो! **अभिधेतन**- दौड़ौ **जीवान् नः**- हम जीते रहतों के पास
हथात् पुरः- हमारे मारे जाने से पहले ही दौड़ो। **हवनश्रुतः**-
हे पुकार सुनने वाले! **कद्ध स्थ**- तुम कहां हो?

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव या विचार हमें भेज सकते हैं, जिन्हें अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

सम्पादकीय

" योग बिना जिंदगी नीरस है "

योग का उद्देश्य हमारे जीवन का समग्र विकास करना है अर्थात् जीवन का सर्वांगी विकास करना। सर्वांगी विकास से तात्पर्य यहां शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास से है। योग जीवन जीने की कला है। योग एक ऐसा साधना विज्ञान है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मो के संस्कार क्षीण हो जाते हैं। शारीरिक, एवं मानसिक निरोगता, स्वस्थता, व कुविचारों, कुसंस्कारों से मुक्ति मिलती है। सुसंस्कारिता, सुविचार के द्वारा अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है, जीवन उच्च व दिव्य बनता जाता हैं। आत्मदर्शन व आत्मसाक्षात्कार के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

योग क्या है, इसके बारे में अधिकतर लोग नहीं जानते। निन्यानबे प्रतिशत लोग योग के आसन और प्राणायाम करके ही खुद को योगी मान लेते हैं। ये तो योग के केवल दो छोटे से अंग हैं। योग एक बहुत लंबी यात्रा है, जो शरीर के साथ शुरू होती है, लेकिन आगे क्रमशः सूक्ष्म और गहरी होती जाती है, मन के पार समाधियों के आसमान खुलते जाते हैं। पतंजलि के योग सूत्रों के प्रारंभ में ही योग की परिभाषा कर दी है- ''योगश्चित्तवृत्ति निरोधः।'' अर्थात् योग है चित्त की वृत्तियों, यानी मन का रुक जाना। सुनने में यह आसान लगता है, लेकिन मनुष्य की सबसे प्रबल समस्या उसका मन ही है। कैसे उसे वश में किया जाए? आसन-प्राणायाम से यह नहीं होगा। वहीं रुक गए, तो योग एक व्यायाम से अधिक कुछ नहीं होगा। दुर्भाग्य से वही हो गया है। लाखों लोग योग को सीखते-सिखाते हैं, फिर यह पृथ्वी इतनी संकट में क्यों है? मनुष्य का जीवन इतना तनावपूर्ण क्यों है? योग को सही अर्थों में समझना जरूरी है। योग में 'युज' धातु है, उसका अर्थ है जोड़ना। मनुष्य के भीतर जो भी खंड-खंड चीजें हैं, उन्हें एक-दूसरे से जोड़ते जाना। मन को बुद्धि से, बुद्धि को भाव से, भाव को अंतस से। यही योग का लक्ष्य है।

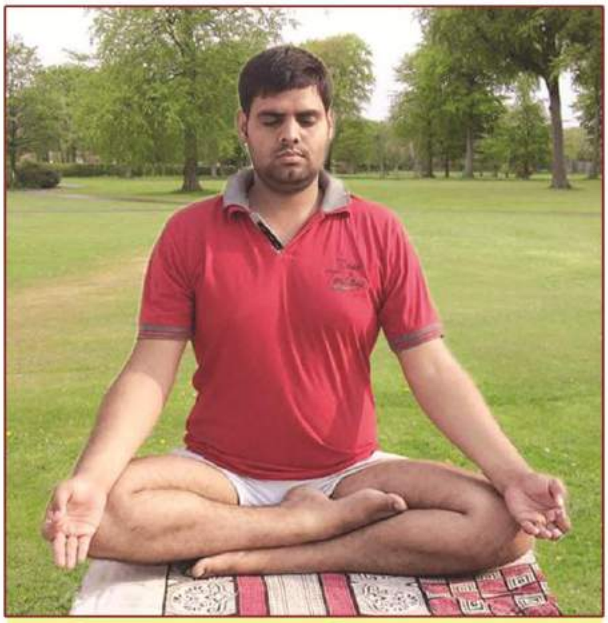

योगाभ्यास करते सम्पादक विवेक प्रिय आर्य।

योग एक प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। योग को हमें अपने जीवन का अंग बना बना लेना चाहिए। यह जिंदगी जीने का सलीका है, इसके बिना जिंदगी नीरस है। वर्तमान समय में लोग गलत खानपान और रहन सहन की वजह से अनेकों बीमारियों से ग्रस्त हैं। आज कोई भी घर ऐसा नहीं है जिसमें कोई व्यक्ति बीमार ना हो। कहा जाता है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। जब हमारा तन ही स्वस्थ नहीं होगा तो हम खुश कैसे रह पाएंगे। योग व्यक्ति को बीमारियों से तो दूर रखता ही है साथ में सोच को भी सकारात्मक बनाता है।

गतांक से आगे...

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा0 अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

.....इसका दूसरा पर्याय करण भी है। चरक संहिता में उल्लेख है -

''करणं हि नाम स्वभाविकानाम् द्रव्याणामभिसंस्कार:''

अर्थात् स्वाभाविक द्रव्यों का अभिसंस्कार करना करण है। जैसे धान या चावल को सुसंस्कारित करके सुपाच्य खीर या परमल बनाना तथा दूध से दही और घी का निर्माण करना। संस्कारित होने पर वस्तु के गुणों में आमूल-चूल परिवर्तन हो जाता है। यह संस्कार ही है जो वस्तु के अन्दर नए गुण पैदा करते हैं। मामूली से धातु अयस्क को जब विविध प्रक्रियाओं द्वारा संस्कारित किया जाता है। तो वही पदार्थ बहुमूल्य धातु या रसायन बन जाती है। मनुष्य के अन्दर भी दिव्य गुणों का समावेश हो सके एवं संचित कषाय कल्मषों का, कुसंस्कारों का निष्कासन हो सके इसके लिए संस्कार आवश्यक हैं। यह संस्कार जितनी छोटी आयु में या जितनी जल्दी किये जा सकें उतने ही सफल होते हैं। शास्त्र का कथन है - ''यन्नवे भाजने लग्न: संस्कारो नान्यथा भवेत्''

अर्थात् जिस प्रकार नये पात्र में किया संस्कार फिर नहीं बदलता, उसी प्रकार आयु बनने के समय कार्य संरचना के समय में किया गया संस्कार स्थायी रहता है। संस्कार प्रक्रिया का एक ही अर्थ है - सद्गुणों का आधान करना और दोष दुर्गणों को निकालना। जिस प्रकार स्वर्णाभूषणों को अग्नि संस्कारित कर उसे निर्मल बना देती है, उसी प्रकार यज्ञाग्नि के सानिध्य में सम्पन्न संस्कार मनुष्य के दोषों को जलाकर उसे परिशोधित एवं निर्मल बना देते हैं। इसलिए प्रत्येक संस्कार के साथ यज्ञाग्नि या अग्निहोत्र का विधान रखा गया है। प्राचीन गृहसूत्रों में संस्कारों के विधि-विधानों का सुविस्तृत वर्णन है। संस्कारों का मुख्य उद्देश्य ही आध्यात्मिक जीवन और धार्मिकता के भावो की वृद्धि करना है। विविध इन्द्रिय भोगों की तरफ तो मनुष्य का आकर्षण शीघ्र हो जाता है पर धार्मिक नियमों और कर्त्तव्यों के पालन की तरफ बडी कठिनाई से ध्यान जाता है। मानव स्वभाव की इसी कमजोरी को देखकर मनीषीयों ने संस्कारों का निर्माण और प्रचलन किया था। उन्होंने यह जान लिया था कि जब तक मनुष्यों को धार्मिक कर्तव्यों का स्मरण निरन्तर न कराया जाता रहेगा, तब तक वे अधिकांश में विविध मनोविकृतियों, चरित्रहीनता और अनैतिकता की तरफ ही झुकेगें। इसलिए उनको बीच-बीच में ऐसे अवसर मिलने चाहिए जिससे वे सामूहिक रुप से मिलकर बैठें, धर्म चर्चा करें और धार्मिक कार्यों को प्रत्यक्ष रुप में आयोजित करके उनसे प्रेरणा लें। संस्कारों का विधान ही ऐसा हितकारी एवं प्रेरणाप्रद बनाया गया है, जिसमें मनुष्यों का अपना कुछ लाभ जान पडे तथा सामाजिक समारोह के रुप में कुछ मनो विनोद का अवसर भी मिले। उससे प्रेरणा ग्रहण करके मनोविकृतियों से छुटकारा पाया जा सके।

संस्कार पद्धति को एक प्रकार से मनोविकारों के निराकरण की विज्ञान सम्मत आध्यात्मिक चिकित्सा प्रणाली भी कहा जा सकता है। यह विज्ञान अद्भुत रुप से आध्यात्मिक लाभों और सामाजिक सत्य परिणामों एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यों से भरा पूरा है। अब तक शरीरगत दुर्बलताओं एवं बीमारियों के समाधान का ही बहुत करके अन्वेषण प्रयास किया गया है। आर्युवेद होम्योपैथी, ऐलोपैथी, नैचरपैथी आदि चिकित्सा पद्धतियां प्राय: शरीरगत कष्टों को ही दूर करती है। मानसिक अस्पतालों में पागलों के लिए इन दिनों एक लंगडी-लूली परीक्षणात्मक व्यवस्था ही चल रही है। आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता मनुष्य की मानसिक विकतियों एवं दुर्बलताओं के समाधान की है। इन्हीं के कारण मानव जाति का सबसे अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। प्रगति के पथ को अवरुद्ध करने वाली प्रधान बाधा यह विकृतियां ही है, ... (शेष पृष्ठ 08 पर)

कवि की कलम से

गीत : वेद मार्ग के सब राही हों...

रचियता : कवि प्रज्जवल आर्य , ग्राम : ताल्हापुर (सहारनपुर)

घटे थान और बिके ईमान, सबका एक यही समाधान।
वेदमार्ग के सब राही हों, तब बने आर्यवर्त महान ।।टेक।।

ऐबदार घर बार में हो गए,
अमन चमन में कैसे आवे।
लत को मत ना कहा यदि,
फिर इज्जत भी ना बच पावे।।
गन्दा धंधा , गन्दी संगत,
गन्दा भोजन जो खावे।
ऐसा जीवन है जिसका,
बिन पूँछ का जन्तु कहलावे।।
चाहवे सज्जन बनना कोई,
बात को मेरी तुम लो मान।
गन्दी संगत, मदिरा, बीड़ी,
तज दो और ये गुटखा पान ।।१।।
वेदमार्ग के सब राही हो....

मगन है दुनिया फैशन में,
अब लाज शर्म तो ना आती।।
महिला तो सबसे आगे है,
सिर पै चुन्नी ना पाती।
जेठ ससुर को ऐसे समझे,
पोता या फिर हो नाती।।
पतलून फाड़कर घुटनो से,
ये मर्द चला बन के भाती।
आती जो लाज आज तुमको तो,
अच्छा मन्दा लो पहचान।।
कपड़े तजकर जोकर वाले,
अपना लो वैदिक परिधान ।।२।।
वेदमार्ग के सब राही हो....

महाभारत काल से पूर्वकाल तक,
जाति थी ना भेदभाव।
ऊंच नीच का कीच नही था,
बहुत अधिक था लाड़ चाव।।
जाने जाते वर्णों से तब,
मनु ग्रन्थ का था प्रभाव।
कर्म देखकर वर्ण मिले था,
नही था तब कोई टकराव।।
हो जाये ये काम पूर्ण तब,
देश को उन्नत लेना मान।
दलितों, पिछडो, कुचलो को जब,
फिर से मिल जाये सम्मान ।।३।।
वेदमार्ग के सब राही हो....

खुद को नेता कहने वाले,
भ्रष्टाचार में लिप्त पड़े।
सत्ता ना दो ऐसो को जो,
वेदविरु) हो जाएं खड़े।।
जिनका शासन आते ही यदि,
फैल जाए शत्रु की जड़े।
तुम ना समझो नेता वो तो,
विक्रेता भारत के बड़े।।
चढ़े आर्य लालकिले पर,
भारत का हो फिर कल्याण।
'प्रज्जवल'अवैदिक युग समझो,
जब देश का पी. एम. हो विद्वान ।।४।।
वेदमार्ग के सब राही हो.....

संस्कार जागृति मिशन
(एक ऐसा प्रयास जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।)

गतांक से आगे

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

......मैं लोगों से पूछा करता हूं कि बताइये आप में बुद्धि अधिक है या पशुओं में अधिक है। प्रायः हर व्यक्ति का उत्तर होता है कि मनुष्य के पास बुद्धि या ज्ञान अधिक होता है। परन्तु आप नित्यप्रति देखते हैं कि एक पशु के रूप में गाय है, उसने अपने बच्चे को जन्म दिया है। कुछ देर में गाय खड़ी हो जाती है, फिर उसका बछड़ा खड़ा हो जाता है और गाय के स्तनों में जाकर स्वयं दूध पीने लग जाता है और उसी बछड़े को थोडे दिन बाद आप किसी नदी या तालाब में डाल दे तो स्वयं तैरने लगेगा और तैरकर तालाबा से, नदी से बाहर निकल जायेगा। परन्तु इसी क्रम में मनुष्य के बच्चे को या पूर्ण मनुष्य को तालाब में डाल दिया जाये तो तब तक वो तैरना नहीं जान सकता है, जब तक उसे सिखाया न जाये। इससे सिद्ध होता है कि स्वाभाविक ज्ञान मनुष्य की अपेक्षा पशुओं में हम देखते हैं। रोजाना के क्रम में हमारे सामने भोजन की थाली आती है, उस भोजन के अंदर कौन सा पदार्थ हमारे सामने खाने योग्य है और कौन नहीं, इस बात को हम नहीं जान सकते हैं कि हमारे भोजन में किसी ने विष मिला दिया है या नहीं। कौन फल हमारे सामने खाने योग्य है और कौन नहीं? परन्तु पशुओं के सामने घास लाकर डाल दें तो जो अहितकारी है- जड़ी-बूटियां आ जाएं जैसे-आक है उसे गाय, भैंस, घोड़ा आदि पशु सूंघकर घास को तो खा लेंगे परन्तु उस आक को नहीं खायेंगे। क्या इन पशुओं ने वेद पढ़े हैं या इनको किसी ने सत्संग द्वारा समझाया है। परमात्मा ने इन्हें स्वाभाविक ज्ञान अर्थात् सूंघने की शक्ति दी है। वो सूंघ कर इस बात को भांप लेते हैं कि अमुक वस्तु मेरे खाने के लिए है अमुक नहीं।

इसी प्रकार आप एक बात और देखें कि 50 माताओं ने एक स्थान पर 50 बच्चों को जन्म दिया और जन्म लेते ही उन 50 बच्चों को इकठ्ठा करके एक स्थान पर रख दीजिए और कुछ समय के बाद किसी एक मां से यह कहिये कि मां जाओ इन 50 बच्चों में से आप अपने बच्चे को पहचान लीजिए। शायद कोई ऐसी मां हो जो उन 50 बच्चों में से अपने बच्चे की पहचान कर सके। परन्तु दूसरी तरफ 50 गायों के बछड़े और बछियां को पैदा होते ही अपनी मां से अलग कर दो किसी बाडे में बंद कर दो और किसी एक गाय को उन 50 बछडों के बीच में छोड़ दीजिए तो वो गाय अपने बछड़े या बछिया को पहचान लेगी। क्या उस गाय को किसी ने बतलाया है कि अमुक बछड़ा या बछिया तेरा बेटा या बेटी है? मनुष्य को बताना पड़ता है- मां अपने बेटे को कहती है कि पुत्र ये तेरे पिताजी हैं, ये तेरे दादा जी हैं, ये तेरे चाचा जी हैं, मैं तेरी मां हूं, ये तेरे मामा जी हैं लेकिन गाय ने अपने बछड़े को नहीं कहा था कि मैं तेरी मां हूं। लेकिन गाय ने अपने बछड़े को सूंघा और पहचान लिया कि ये मेरा बछड़ा है। इसी प्रकार बछड़ा 50 गायों के बीच में अपनी मां को पहचान लेता है ये क्षमता परमात्मा ने पशुओं में स्वाभाविक दी है। इस कारण मनुष्य से अधिक स्वाभाविक ज्ञान पशुओं के पास होता है। पशुओं के अंग-प्रतिअंग उनकी चमड़ी, उनके बाल, उनका मूत्र और गोबर आदि औषधियों के काम आते हैं परन्तु विचार कीजिए मनुष्य की कोई भी चीज काम में आती है अर्थात् कोई नहीं। इसलिए यदि धर्म हमारे पास नहीं है, ज्ञान हमारे पास नहीं है, शील हमारे पास नहीं है तो हमारा जीवन पशुओं से भी गया है। इसलिए जन्म लेते ही बालक से पूछा जाता है कि तू कौन है? तुझे क्या करना है? तेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? इसलिए मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है ईश्वर की प्राप्ति। साधना, उपासना, ज्ञानार्जन, वेदादि सत्शास्त्रों के माध्यम से, विद्वानों के संग से, दर्शन शास्त्रों के ज्ञान से, अध्ययन से व्यक्ति पहले स्व को जानने का प्रयत्न करे और स्व को जानकर के परमात्मा को जानने की कोशिश करे। वह परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्यापक है, वह परमात्मा सब जगह मौजूद है।........................(शेष पृष्ठ 08 पर)

पेज 07 का शेष

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है? (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....लेकिन दुर्भाग्य है कि व्यक्ति अज्ञान के कारण, अविद्या के कारण परमात्मा को अनेक स्थानों पर खोजता फिर रहा है। जैसे-कोई काशी जा रहा है, कोई हरिद्वार जा रहा है, कोई मथुरा जा रहा है, कोई वृन्दावन जा रहा है, कोई वैष्णो देवी जा रहा है तो कोई नगरकोट आदि जा रहा है। अलग-अलग स्थानों पर व्यक्ति उस परमेश्वर को खोज रहा है, ढूंढ़ रहा है, परन्तु इस विषय में आपको विचार करना चाहिए, सोचना चाहिए कि एक बच्चा अपनी मां के पास जाकर कहता है मां भूख लगी है मुझे रोटी दे दो। मां बच्चे से पूछती है कि बेटा तुझे भूख कहां लगी है? बालक कहता है मां मुझे भूख पेट में लगी है। मां चार-पांच रोटी लेती है और उस बच्चे के पेट से बांध देती है। मैं आपसे पूछता हूं कि क्या पेट से रोटी बांधने से बच्चे की भूख मिट जायेगी, आपका उत्तर नहीं में होगा। इसी तरह से किसी बच्चे को प्यास लगे और प्यास से व्याकुल होकर वह अपनी मां के पास जाता है, पिता के पास जाता है और कहता है मुझे पानी पिलाओ तो मां उस बच्चे को उठाती है और पानी के टैंक में अंदर उस बच्चे को डुबा देती है और फिर बाहर निकाल लेती है परन्तु फिर भी बच्चे की प्यास शांत नहीं होती। मां उसे पूछती है कि मैंने तुझे पानी के टैंक में डुबो दिया फिर भी तेरी प्यास शांत नहीं हो रही है तो बच्चा कहेगा कि मां मुझे प्यास पेट में लगी है, मुझे प्यास अंदर लगी है, मुझे पानी अंदर पिलाओ, मुझे भूख अंदर लगी है अंदर खिलाओ। जैसे भूख का स्थान जहां था वहां अन्न, फल, दूध नहीं पहुंचेगा जब तक हमारी भूख नहीं मिटेगी, जब तक पानी प्यास के स्थान पर नहीं पहुंचेगा तब तक हमारी प्यास नहीं मिटेगी। ठीक इसी प्रकार से आज व्यक्ति परमात्मा को बाहर देख रहा है। जैसे रोटी बाहर बंधी हुयी थी, जैसे जल बाहर था, जल बाहर होने से प्यास नहीं मिटी, रोटी बाहर होने से भूख नहीं मिटी, ठीक उसी प्रकार आपको सोचना पडेगा कि ईश्वर की प्राप्ति कौन करना चाहता है? ईश्वर की प्राप्ति आत्मा करना चाहता है और आत्मा कहां है? आप वेदों को पढ़िये, आप चिंतन करिये, आप मनन कीजिए कि आत्मा का स्थान कहां है? हमारे ऋषियों-मुनियों ने हमारी आत्मा का स्थान हृदय बताया है। इसलिए आत्मा अंदर है और परमात्मा को बाहर ढूंढ रहे हैं। इसलिए परमात्मा को बाहर ढूंढ़ने के कारण जब तक जहां आत्मा है वहां परमात्मा को नहीं देखोगे, नहीं ढूंढोगे तब तक हम अशांत ही रहेंगे। जैसे पेट पर बंधी रोटी हमारी भूख को नहीं मिटा सकी, पानी में लगाई डुबकी हमारी प्यास को नहीं बुझा सकी ठीक उसी प्रकार से जो व्यक्ति यह सोचते हैं कि परमात्मा मंदिर में है, परमात्मा मस्जिद में है, परमात्मा कहीं गुरूद्वारे में है, किसी गिरजे में है वह अंधेरे में हैं, वो अंधकार में विचरण कर रहे हैं, अंधकार में ठोकर खा रहे हैं। परमात्मा ने हमें बुद्धि दी है, इस बुद्धि के द्वारा हमें चिन्तन करना चाहिए था, सोचना चाहिए था, परमात्मा ने हमें वेद ज्ञान दिया, प्रकाश दिया है।

....(शेष अगले अंक में)

पृष्ठ 05 का शेष....

संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया (लेखका : डा. अर्चना प्रिय आर्या)

.....पर इनके निराकरण का कोई उपाय न किसी चिकित्सा पद्धति ने ढूंढा और न प्राप्त ही किया। भारतीय संस्कृति की सबसे बडी विशेषता है- जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु संस्कारों द्वारा सतत् शोधन तथा आत्मसत्ता के अभिवर्धन की अभिनव व्यवस्था। मानव कल्याण की महान परम्पराओं में जितने भी आयोजन एवं अनुष्ठान हैं, उनमें सबसे बडी परम्परा संस्कारों की है। यह वे आध्यात्मिक उपचार हैं जिनके माध्यम से मनुष्य को सुसंस्कृति के अर्न्तगत जीवन क्रम में इन्हें इस प्रकार समाविष्ट कर दिया गया है कि यथा सम्भव वांछित श्रेष्ठ संस्कार व्यक्ति को स्वयमेव मिलते रहें और वह अनगढ नर-पशु से ऊंचा उठकर नर-मानव और नर-नारायण स्तर तक पहुंच सकें।..(शेष अगले अंक में)

प्रेरक प्रसंग

" बुद्धि की परीक्षा "

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक बार एक राजा की कोई संतान नहीं थी, उम्र ढलती जा रही थी। बहुत प्रयास किए, कई हकीमों वैद्यों को दिखाया परन्तु नतीजा सिफर रहा। राजा को चिन्ता सताने लगी कि मेरे बाद राज पाट कौन संभालेगा। राजा को उपाय सूझा, महल के भीतर एक नया महल बनवाया, उसके मुख्य द्वार पर बीजगणित का एक सूत्र लिखवाया और पूरे राज्य में मुनादी पिटवाई कि जो भी व्यक्ति इस सूत्र को हल कर लेगा उसके बाद यह द्वार खुल जायेगा। वही इस महल का स्वामी व राज्य का उत्तराधिकारी होगा।

अब पूरे राज्य के बड़े बड़े गणितज्ञ व् विद्वान पहुंचने लगे पर कोई भी उस सूत्र को हल नहीं कर सका। राजा की चिन्ता बढ़ने लगी। कुछ दिन बाद प्रयास करने वाले आने बन्द हो गए। राजा ने पास के राज्यों में भी ढिंढोरा पिटवा दिया प्रलोभन अच्छा था बहुत से लोग आने लगे पर किसी से भी सूत्र हल नहीं हुआ। धीरे धीरे लोग आने कम हो गए।

एक दिन केवल दो ही लोग पहुंचे जिनमे से एक गणितज्ञ थे और एक साधारण युवक, युवक के जीर्ण शीर्ण वस्त्र देख कर द्वारपाल उसे क्रोधित हो भगाने लगे- तुम से न हो सकेगा, जाओ। राजा की दृष्टि पड़ी तो युवक को रुकवाया गया, राजा बोले, पहले युवक को ही अवसर प्रदान किया जाए। युवक ने कहा कि पहले विद्वान व्यक्ति को ही अवसर दें, यदि इनसे न हो सका तब प्रयास करूंगा। राजा बोले ठीक है, आप आसन ग्रहण करें। वह गणितज्ञ शाम ढलने तक प्रयास करता रहा पर कुछ न हुआ। अब युवक को बुलाया गया, युवक ने जाकर द्वार पर हाथ लगा कर धक्का दिया, द्वार खुल गया। महल करतल ध्वनि से गूंज उठा। राजा ने पूछा, आप कैसे कर पाए? युवक ने कहा कि जब विद्वान व्यक्ति पूरे दिन जूझ रहे थे तब मुझे लगा कि यह भी हो सकता है कि ये कोई बीजगणित सूत्र न ही हो। एवं द्वार पर बुद्धि परखने के लिए लिखा गया हो।

'जीवन मे कई बार हम सभी किसी समस्या से जूझते रहते हैं जबकि वो कोई समस्या होती ही नहीं...!!'

संस्कार वाणी

''समाज सदैव समृद्ध एवं सक्षम इंसान का ही साथ देता है। इसलिए, अपनी लाचारी एवं कमजोरियों को अपने तक ही सीमित रखना ही बुद्धमानी है। ताकि समाज का साथ सदैव हमारे साथ बना रहे।'' – डा.अर्चना प्रिय आर्य जी (अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

स्वास्थ्य चर्चा

'उच्च रक्तचाप' का घरेलु उपचार

नीति प्रिय आर्य

आजकल की भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में असंतुलित जीवनशैली और आहार के कारण अनेक रोग हमारे शरीर को घेर लेते हैं, इनमें एक उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) भी है। उच्च रक्तचाप एक गंभीर बीमारी है। आपका हृदय धमनियों के माध्यम से खून को शरीर में भेजता है। शरीर की धमनियों में बहने वाले रक्त के लिए एक निश्चित दबाव जरूरी होता है। जब किसी वजह से यह दबाव अधिक बढ़ जाता है, तब धमनियों पर ज्यादा असर पड़ता है। दबाव बढ़ने के कारण धमनियों में रक्त का प्रवाह बनाए रखने के लिये दिल को सामान्य से अधिक काम करना पड़ता है। इस स्थिति को उच्च रक्तचाप कहते हैं। हाई ब्लड प्रेशर (उच्च रक्तचाप) के कारण आपका हृदय भी काम करना बंद कर सकता है। लगातार उच्च रक्तचाप रहने से आपके शरीर को कई तरह की हानि पहुँच सकता है। आइये जानते हैं निम्न रक्तचाप के कुछ घरेलू उपाय-

उच्च रक्तचाप के 10 घरेलु उपाय :-

1. लहसुन हर घर में इस्तेमाल में लाया जाता है। लहसुन ब्लड प्रेशर ठीक करने में बहुत मददगार होता है। लहसुन से हाई बीपी को नियंत्रित कर सकते हैं।
2. एक बड़ा चम्मच आँवले का रस और इतना ही शहद मिलाकर सुबह-शाम लेने से हाई ब्लड प्रेशर में लाभ होता है। इससे उच्च रक्तचाप का उपचार होता है।
3. जब ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ हो तो आधे गिलास गुनगुने पानी में काली मिर्च पाउडर का एक चम्मच घोल लें। इसे दो-दो घंटे के बाद पीते रहें। इससे हाई ब्लड प्रेशर के लक्षणों का उपचार होता है।
4. उच्च रक्तचाप के नियंत्रण में तरबूज लाभ पहुंचाता है। तरबूज के बीज की गिरी तथा खसखस अलग-अलग पीसकर बराबर मात्रा में रख लें। इसका रोजाना एक-एक चम्मच सेवन करें।
5. बढ़े हुए ब्लड प्रेशर में एक गिलास पानी में आधा नींबू निचोड़कर तीन-तीन घण्टे के अन्तर में पीना चाहिए। इससे उच्च रक्तचाप का इलाज होता है।
6. उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए पाँच तुलसी के पत्ते तथा दो नीम की पत्तियों को पीस लें। इसे एक गिलास पानी में घोलकर खाली पेट सुबह पिएं। इससे हाई ब्लड प्रेशर के लक्षणों का इलाज होता है।
7. हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को नंगे पैर हरी घास पर 10-15 मिनट तक चलना चाहिए। रोजाना चलने से ब्लड प्रेशर नॉर्मल हो जाता है।
8. उच्च रक्तचाप के उपचार के लिए ताजा पालक और गाजर का रस निकालें। इसे रोज पिएं। इसका रस लाभकारी सिद्ध होता है।
9. उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए करेला का सेवन करें। यह उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत लाभदायक है। इससे हाई ब्लड प्रेशर के लक्षण ठीक होते हैं।
10. 3 ग्राम मेथीदाना पाउडर सुबह-शाम पानी के साथ लें। इसे प्रतिदिन खाने से लाभ मिलता है। इससे उच्च रक्तचाप का इलाज होता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

05 मई 2020 राजपथ मथुरा

शराब के बजाय किसानों को दी जाये प्राथमिकताः अर्चना प्रिय

- युवा पीढ़ी को नशे में ढ़केल दे ऐसा राजस्व किसी काम का नहीं
- संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष ने सरकार के फैसले को गलत बताया

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने सरकार के शराब की दुकानों को खोलने के कदम को गलत बताते हुए कहा कि सरकार को किसान, मजदूरों व व्यापारियों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए था।

उन्होंने कहा कि सब्जी, दूध, चावल आदि दैनिक उपयोगी वस्तुओं की दुकानों के लिए समय निर्धारित है लेकिन शराब के लिए कोई समय सीमा नहीं है। सरकार को सबसे पहले किसान, मजदूर व व्यापारी वर्ग की रोजी-रोटी के हित में फैसला लेना चाहिए था न कि उनकी बर्बादी के हित में। पहले प्राकृतिक आपादा ने किसानों की कमर तोड़ दी फिर अब लॉकडाउन के चलते उसकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने कहा कि यह अच्छा मौका था जब पूरे देश में एक साथ शराब व धूम्रपान बंदी हो सकती थी लेकिन लगता है सरकार की इन्हें बंद करने की कोई नीयत नहीं हैं। उन्होंने कहा कि लोगों द्वारा तर्क दिया जाता है कि सरकार का राजस्व बढ़ता है लेकिन ऐसे राजस्व का क्या फायदा जो हमारी युवा पीढ़ी को नशे की तरफ ढकेल दे। उन्होंने

सरकार से मांग की है कि सरकार को शराब तत्काल बंद कर किसान, मजदूर, व्यापारी के हित में सोचना चाहिए।

संस्कार वाणी

''प्रेम एक ऐसा अनुभव है जो मनुष्य को कभी हारने नहीं देता है। और घृणा एक ऐसा अनुभव है जो इंसान को कभी जीतने नहीं देता है।''

– आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी (संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोरोना महामारी के बचाव के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आह्वान पर ''हर घर यज्ञ-घर घर यज्ञ'' मुहिम के अंतर्गत यज्ञ करते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी व अन्य पदाधिकारीगण।

''हर घर यज्ञ-घर घर यज्ञ'' मुहिम के अंतर्गत यज्ञ करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी।

कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को भोजन वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी डा. कपिल प्रताप सिंह जी।

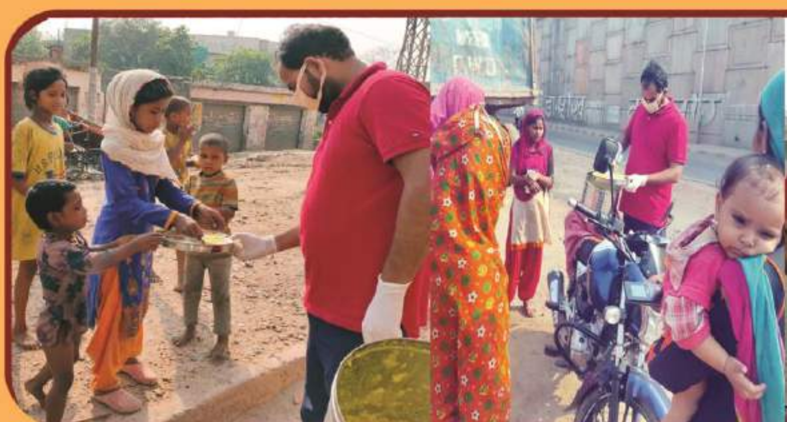
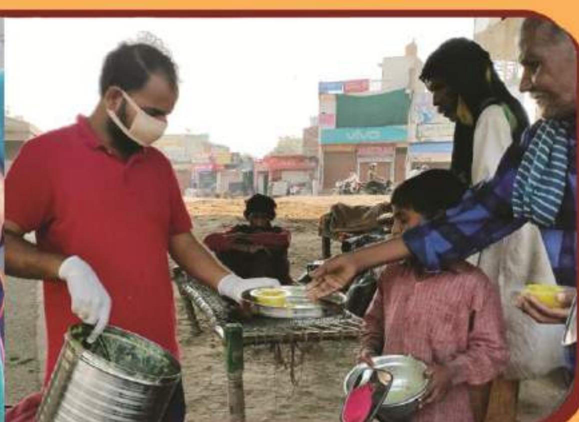

कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को भोजन वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी दीपक सारस्वत जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोराना संक्रमण महामारी के आपातकाल के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को खिचड़ी वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के डा.कपिल प्रताप सिंह जी तथा तैयार करतीं अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों खिचड़ी, मीठा भात व दलिया तैयार करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों को भोजन वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी दीपक सारस्वत जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

संस्कार जागृति मिशन के सचिव श्री विवेक प्रिय आर्य जी-श्रीमती नीति प्रिय आर्य जी की बेटी जागृति प्रिय आर्य का ''निष्क्रमण संस्कार'' मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी द्वारा वैदिक विधि विधान से सम्पन्न कराया गया।

संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य व श्रीमती सरोज रानी आर्य शादी की 37वीं वर्षगांठ पर यज्ञ करते हुए।

संस्कार जागृति मिशन के सचिव श्री विवेक प्रिय आर्य जी की बेटी के ''निष्क्रमण संस्कार'' के अवसर पर आशीर्वाद देते आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व अन्य।

संस्कार जागृति मिशन के सचिव श्री विवेक प्रिय आर्य जी-श्रीमती नीति प्रिय आर्य जी की बेटी जागृति प्रिय आर्य का ''निष्क्रमण संस्कार'' के अवसर पर।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

अतुल्य भारत चेतना | प्रादेशिक

घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ मुहिम के अंतर्गत लाखों घरों में हुआ अग्निहोत्र

आर्य समाज के आह्वान पर वैश्विक कल्याण को किया यज्ञ

07 मई 2020 | राजपथ मथुरा

मीठा भात बांट की जरूरतमन्दों की सेवा

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा वैश्विक महामारी कोविड-19 के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित मजदूर, गरीब, असहाय व जरूरतमन्दों को टाऊनशिप क्षेत्र में मीठे भात का वितरण किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि पिछले कई दिनों से खिचड़ी व पूड़ी सब्जी वितरण के बाद आज मीठे चावलों प्रसाद जरूरतमन्दों तक पहुंचाया गया है। उन्होंने कहा कि मिशन द्वारा पिछले एक डेढ़ माह से लगातार खाद्य सामग्री चावल, आटा, नमक, चाय तथा खिचड़ी, खाने के पैकेटों का वितरण किया जा रहा है। इसके अलावा साबुन व सेनेटाइजर भी जरूरतमंदों को दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि बार बार साबुन से हाथ धोने व घर पर ही रहने के साथ-साथ सामाजिक दूरी के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गरीबों की सेवा ही भगवान कि सच्ची पूजा है। आगे भी यथासंभव सेवा जारी रहेगी वितरण में सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, दीपक सारस्वत का सराहनीय योगदान रहा।

हिन्दुस्तान

आगरा • गुरुवार • 30 अप्रैल 2020 •

जरूरतमंदों में किया खिचड़ी का वितरण

मथुरा। लॉकडाउन में बुधवार को संस्कार जागृति मिशन द्वारा जरूरतमंदों को खिचड़ी का वितरण किया गया। इस दौरान अध्यक्षा डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में पाधिकारियों ने रिफाइनरी नगर क्षेत्र में झुग्गी झौंपड़ियों में रहने वालों को खिचड़ी का वितरण किया और कोरोना से बचाव को जागरूक किया। उन्होंनि कहा कि मिशन शुरू से ही जरूरतमंदों की सेवा में जुटा है। इसमें सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, दीपक सारस्वत आदि का योगदान रहा।

पंजाब केसरी DELHI | 4 मई, 2020 | सोमवार

वैश्विक कल्याण को किया यज्ञ

मथुरा, (पंजाब केसरी): सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ मुहिम के अंतर्गत वैश्विक कल्याण व कोरोना योद्धाओं के सम्मान के लिए संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारियों द्वारा अपने घरों में एक साथ एक समय रविवार सुबह 9.30 बजे से वैदिक विधि विधान के साथ यज्ञ सम्पन्न किया गया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने बताया कि अग्निहोत्र से वायुमंडल पवित्र होता है तथा रोगों के अनेक कीटाणु व वायरसों का नाश होता है। यज्ञ से वायु शुद्ध होकर स्वयं कृमियों का नाश कर देती है। वैश्विक महामारी कोराना वायरस में भी यज्ञ कारागार साबित होगा। अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारी प्राचीन संस्कृति है। जब तक इस देश में घर घर यज्ञ होते रहे तब तक कोई वायरस यहां अपने पैर नहीं जमा पाया। उन्होंने आह्वान किया कि पुनः वैदिक संस्कृति की ओर वापस लौटना होगा, तभी हम विश्वगुरु के आसन पर बैठ सकेंगे। यज्ञ करने वालों में सचिव विवेक प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, डॉ. सचिन कुंतल, सरोज रानी आर्य, शकुंतला देवी, रामश्री देवी आदि थे।

अमर उजाला

आगरा | रविवार, 26 अप्रैल 2020

प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई गई पुण्यतिथि

मथुरा। मसानी चौक स्थित वेदमंदिर में आचार्य प्रेमभिक्षु की 25वीं पुण्यतिथि प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर वेदमंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज ने कहा कि स्वर्गीय आचार्य श्री के भौतिक शरीर को विदा हुए 25 वर्ष हो गए परंतु उनका सौम्य व्यक्तित्व व प्रेरणादायी शिक्षाएं कभी हमसे ओझल नहीं हुई।

आचार्य प्रेमभिक्षु बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे। उनकी विद्वता, लेखन शक्ति, सर्जनात्मकता, सिद्धांत निष्ठा व समर्पण उच्च कोटि का था। अल्प समय में ही मथुरा जनपद के 50 लगभग गांवों में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

आचार्य प्रेमभिक्षु बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे : महाराज

इधर, संस्कार जागृति मिशन द्वारा आर्य समाज के विद्वान व वेदमंदिर मथुरा के संस्थापक आचार्य प्रेमभिक्षु की 25वीं पुण्यतिथि मनाई गई। मिशन की संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि आचार्य प्रेमभिक्षु ने जीवनभर आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया और गांवों में घूम-घूमकर मानव समाज को जागृत करने का अथक प्रयास किया। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि स्वर्गीय आचार्य महर्षि दयानंद के कट्टर अनुयायी थे। उन्होंने वैदिक धर्म के उत्थान के लिए सब कुछ सहा। अनेक संकटों के बावजूद ऋषि कार्य में लगे रहे। इस दौरान सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप सिंह आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की। संवाद

छोटीसीबात | मथुरा । 25 अप्रैल 2020

आचार्य प्रेमभिक्षु की 25वीं पुण्यतिथि मनाई

मथुरा (छोटी सी बात)। मसानी चौक स्थित वेदमन्दिर में आचार्य प्रेमभिक्षु की 25वीं पुण्यतिथि प्रेरणा दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर वेदमन्दिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज ने कहा कि स्वर्गीय आचार्य के भौतिक शरीर को विदा हुए 25 वर्ष हो गए परन्तु उनका सौम्या व्यक्तित्व व प्रेरणादायी शिक्षाएं कभी हमसे ओझल नहीं हुई।

आचार्य प्रेमभिक्षु बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे। उनकी विद्वता, लेखन शक्ति, सर्जनात्मकता, सिद्धांत निष्ठ व समर्पण उच्च कोटि का था। वे सच्चे अर्थों में महात्मा थे व बड़ी सादगी से जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने आर्यसमाज को गांवों तक पहुंचाने का बड़ा ही उत्तम कार्य किया। अल्प समय में ही मथुरा जनपद के 50 लगभग गांवों में आर्यसमाज की स्थापना की थी। संस्कार जागृति मिशन द्वारा आचार्य प्रेमभिक्षु की 25 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि आचार्य प्रेमभिक्षु ने जीवनभर आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार किया और गांवों में घूम-घूमकर मानव समाज को जाग्रत करने का अथक प्रयास किया। वे आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान, प्रखर वक्ता, लोकप्रिय लेखक व भावुक कवि थे तथा वैदिक परिवार निर्माण आंदोलन के सूत्रधार थे। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि स्वर्गीय आचार्य महर्षि दयानंद के कट्टर अनुयायी थे। उन्होंने वैदिक धर्म के उत्थान के लिए सब कुछ सहा। अनेक संकटों के बावजूद भी ऋषि कार्य में लगे रहे। इस दौरान सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप सिंह आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

छोटीसीबात | 03 मई 2020

वैश्विक कल्याण को किया यज्ञ

मथुरा (छोटी सी बात)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर 'घर घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' मुहिम के अंतर्गत वैश्विक कल्याण व कोरोना योद्धाओं के सम्मान के लिए संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारियों द्वारा अपने घरों में एक साथ, एक समय रविवार सुबह 9:30 बजे से वैदिक विधि विधान के साथ यज्ञ सम्पन्न किया गया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने बताया कि अग्निहोत्र से वायुमंडल पवित्र होता है तथा रोगों के अनेक कीटाणु व वायरसों का नाश होता है। यज्ञ से वायु शुद्ध होकर स्वयं मिर्यों का नाश कर देती है। वैश्विक महामारी कोराना वायरस में भी यज्ञ कारागार साबित होगा। अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारी प्राचीन संस्कृति है। जब तक इस देश में घर घर यज्ञ होते रहे तब तक कोई वायरस यहां अपने पैर नहीं जमा पाया। उन्होंने आह्वान किया कि पुनः वैदिक संस्कृति की ओर वापस लौटना होगा, तभी हम विश्वगुरू के आसन पर बैठ सकेंगे। यज्ञ करने वालों में सचिव विवेक प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, डॉ. सचिन कुंतल, सरोज रानी आर्य, शकुंतला देवी, रामश्री देवी आदि थे।

छोटीसीबात | 11 मई 2020

सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं

मथुरा (छोटी सी बात)। वैश्विक महामारी कोविड-19 के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित मजदूर, गरीब, असहाय व जरूरतमन्दों को संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारियों द्वारा टाऊनशिप क्षेत्र में दलिया का वितरण किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि पिछले डेढ़ माह से जरूरतमंदों की सेवा मिशन द्वारा की जा रही है। लॉकडाउन के प्रथम चरण से लेकर तीसरे चरण तक मिशन के सदस्यों व पदाधिकारियों ने खाद्य सामग्री जिसमें आटा, चावल, नमक, बिस्कुट, चाय, पूड़ी ...ड़ी, मीठा भात, दलिया ... सेनेटाइजर निः शुल्क ...क पहुंचाये जा रहे हैं।

छोटीसीबात | 29 अप्रैल 2020

खिचड़ी बांटकर की जरूरतमन्दों की सेवा

मथुरा (छोटी सी बात)। कोरोना महामारी के आपातकाल के दौरान गरीब, असहाय व जरूरतमन्दों को संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में पाधिकारियों व सदस्यों द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र अंतर्गत खिचड़ी का वितरण किया गया और कोरोना के बचाव के लिए जागरूक किया। डॉ.आर्य ने बताया कि नर सेवा ही नारायण सेवा है इसी भाव को लेकर मिशन द्वारा जरूरतमंदों के लिए खाद्य सामग्री आटा, चावल, नमक व भोजन पूड़ी सब्जी, खिचड़ी, बिस्कुट आदि का वितरण निरन्तर किया जा रहा है।

छोटीसीबात | मथुरा । 05 मई 2020

शराब के बजाय किसानों को दी जाये प्राथमिकता

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने सरकार के शराब की दुकानों को खोलने के कदम को गलत बताते हुए कहा कि सरकार को किसान, मजदूरों व व्यापारियों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए था। उन्होंने कहा कि सब्जी, दूध, चावल आदि दैनिक उपयोगी वस्तुओं की दुकानों के लिए समय निर्धारित है लेकिन शराब के लिए कोई समय सीमा नहीं है। सरकार को सबसे पहले किसान, मजदूर व व्यापारी वर्ग की रोजी-रोटी के हित में फैसला लेना चाहिए था न कि उनकी बर्बादी के हित में। उन्होंने कहा कि यह अच्छा मौका था जब पूरे देश में एक साथ शराब व धूम्रपान बंदी हो सकती थी, लेकिन लगता है सरकार की इन्हें बंद करने की कोई नीयत नहीं हैं। लोगों द्वारा तर्क दिया जाता है कि सरकार का राजस्व बढ़ता है लेकिन ऐसे राजस्व का क्या फायदा जो हमारी युवा पीढ़ी को नशे की तरफ ढकेल दे। सरकार से मांग की है कि सरकार को शराब तत्काल बंद कर किसान, मजदूर, व्यापारी के हित में सोचना चाहिए।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 4 मई 2020

वैश्विक कल्याण को किया यज्ञ

संस, मथुरा : संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारियों ने अपने-अपने घरों में एक साथ वैदिक विधि विधान के साथ यज्ञ किया।

संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने बताया कि अग्निहोत्र से वायुमंडल पवित्र होता है। कीटाणु व वायरस का नाश होता है। वैश्विक महामारी कोराना वायरस में भी यज्ञ कारगर साबित होगा। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारी प्राचीन संस्कृति है। जब तक इस देश में घर-घर यज्ञ होते रहे, तब तक कोई वायरस यहां अपने पैर नहीं जमा पाया। उन्होंने आह्वान किया कि पुनः वैदिक संस्कृति की ओर लौटना होगा, तभी हम विश्वगुरु के आसन पर बैठ सकेंगे। सचिव विवेक प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, डॉ. सचिन कुंतल, सरोज रानी आर्य, शकुंतला देवी, रामश्री देवी आदि ने यज्ञ किया।

हिन्दुस्तान

सोमवार • 04 मई 2020 •

विश्व कल्याण के लिए घर-घर हुआ हवन

मथुरा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर घर घर यज्ञ-हर घर यज्ञ मुहिम चलाई गई। इसके

हिन्दुस्तान

आगरा • शुक्रवार • 08 मई 2020 •

जरूरतमंदों में किया मीठे भात का वितरण

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा कोरोना महामारी के चलते लगे लॉकडाउन में प्रभावित मजदूर, गरीब, असहाय व जरूरतमंदों को टाऊनशिप क्षेत्र में मीठे भात का वितरण किया गया। मिशन की अध्यक्षा डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि पिछले कई दिनों से खिचड़ी व पूड़ी सब्जी वितरण के बाद आज मीठे चावलों प्रसाद जरूरतमंदों तक पहुंचाया गया है। उन्होंने कहा कि मिशन द्वारा पिछले एक माह से लगातार खाद्य सामग्री के साथ साबुन, सेनेटाइजर आदि जरूरत के सामानों का वितरण किया जा रहा है। इस दौरान लगातार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए सभी का इसके लिए जागरूक किया जा रहा है। इसमें सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ.कपिल प्रताप सिंह, दीपक सारस्वत का सराहनीय योगदान रहा।

03 मई 2020 | राजपथ मथुरा

आर्य समाज के आह्वान पर वैश्विक कल्याण को किया यज्ञ

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर 'घर घर यज्ञ हर घर यज्ञ' मुहिम के अंतर्गत वैश्विक कल्याण व कोरोना योद्धाओं के सम्मान के लिए संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारियों द्वारा अपने घरों में एक साथ एक समय रविवार सुबह 9.30 बजे से वैदिक विधि विधान के साथ यज्ञ सम्पन्न किया गया। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने बताया कि अग्निहोत्र से वायुमंडल पवित्र होता है तथा रोगों के अनेक कीटाणु व वायरसों का नाश होता है। यज्ञ से वायु शुद्ध होकर स्वयं कृमियों का नाश कर देती है। वैश्विक महामारी कोराना वायरस में भी यज्ञ कारागार साबित होगा। अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारी प्राचीन संस्कृति है। जब तक इस देश में घर घर यज्ञ होते रहे तब तक कोई वायरस यहां अपने पैर नहीं जमा पाया। यज्ञ करने वालों में सचिव विवेक प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, कपिल प्रताप सिंह, डॉ. सचिन कुंतल, सरोज रानी आर्य, शकुंतला देवी, रामश्री देवी आदि थे।

29 अप्रैल 2020 | राजपथ मथुरा

खिचड़ी बांट की जरूरतमन्दों की सेवा

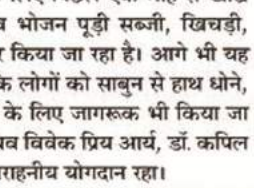

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। कोरोना महामारी के आपातकाल के दौरान गरीब, असहाय व जरूरतमन्दों को संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में पाधिकारियों व सदस्यों द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र अंतर्गत खिचड़ी का वितरण किया गया और कोरोना के बचाव के लिए जागरूक किया। डॉ. आर्य ने बताया कि नर सेवा ही नारायण सेवा है इसी भाव को लेकर मिशन द्वारा जरूरतमंदों के लिए पिछले एक माह से खाद्य सामग्री आटाए चावल, नमक व भोजन पूड़ी सब्जी, खिचड़ी, बिस्कुट आदि का वितरण निरन्तर किया जा रहा है। आगे भी यह सेवा जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि लोगों को साबुन से हाथ धोने, सोशल डिस्टेंस व घर पर ही रहने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। मिशन के इस कार्य में सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, दीपक सारस्वत का सराहनीय योगदान रहा।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम
तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां
देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।